

最新整理珍藏版

中華語海



ZHONGHUA
YUHAI

主编 丁焕朋



红旗出版社

红旗出版社
RED FLAG PRESS

推动进步的力量

图书在版编目(CIP)数据

中华语海 / 丁焕朋主编.

— 北京 : 红旗出版社, 2015. 6

ISBN 978-7-5051-3489-8

I. ①中… II. ①丁… III. ①汉语—语言读物

IV. ①H194

中国版本图书馆CIP数据核字(2015)第114143号

| | | | |
|--------|--------------------|----------------|---------------|
| 书 名 | 中华语海 | | |
| 编 者 | 丁焕朋 | | |
| 出 品 人 | 高海浩 | 责任编辑 | 于鹏飞 |
| 总 监 制 | 徐永新 | 封面设计 | 法思特设计 |
| 出版发行 | 红旗出版社 | 地 址 | 北京市沙滩北街2号 |
| 邮政编码 | 100727 | 编 辑 部 | 010-64031972 |
| E-mail | hongqi1608@126.com | | |
| 发 行 部 | 010-64024637 | | |
| 印 刷 | 北京德富泰印务有限公司 | | |
| 开 本 | 787毫米×1092毫米 | 1/16 | |
| 字 数 | 16千字 | 印 张 | 156 |
| 版 次 | 2015年6月北京第1版 | 2015年6月北京第1次印刷 | |
| ISBN | 978-7-5051-3489-8 | 定 价 | 1560.00元(全六卷) |

欢迎品牌畅销图书项目合作 联系电话: 010-84026619

凡购本书, 如有缺页、倒页、脱页, 本社发行部负责调换



目 录

成语典故

| | |
|------------|----|
| 学海泛舟 | 1 |
| 夜以继日 | 1 |
| 纪昌学射 | 2 |
| 不耻下问 | 3 |
| 闻一知十 | 5 |
| 半途而废 | 6 |
| 后生可畏 | 7 |
| 韦编三绝 | 8 |
| 纸上谈兵 | 9 |
| 凿壁偷光 | 10 |
| 手不释卷 | 11 |



| | |
|-------------------|----|
| 建功立业 | 13 |
| 勿忘在莒 | 13 |
| 披星戴月 | 14 |
| 艰难险阻 | 15 |
| 三省吾身 | 17 |
| 废寝忘食 | 18 |
| 一傅从咻 | 19 |
| 锲而不舍 | 20 |
| 青云直上 | 22 |
| 取而代之 | 23 |
| 孺子可教 | 24 |
| 投笔从戎 | 25 |
| 博而不精 | 26 |
| 鹏程万里 | 28 |
| 望梅止渴 | 29 |
| 治国安邦 | 31 |
| 害群之马 | 31 |
| 下车泣罪 | 32 |
| 同心同德 | 34 |
| 惩前毖后 | 35 |
| 大义灭亲 | 36 |
| 礼贤下士 | 38 |
| 大公无私 | 39 |



| | |
|-------------|-----------|
| 众志成城 | 40 |
| 奉公守法 | 42 |
| 两袖清风 | 43 |
| 喻事明理 | 45 |
| 结草衔环 | 45 |
| 休戚相关 | 47 |
| 杀身成仁 | 48 |
| 戏彩娱亲 | 49 |
| 不欺暗室 | 51 |
| 自怨自艾 | 52 |
| 布衣之交 | 53 |
| 前倨后恭 | 55 |
| 开诚布公 | 56 |
| 暮夜无知 | 58 |
| 一毛不拔 | 59 |
| 瓮里醢鸡 | 60 |
| 管鲍之交 | 61 |
| 网开三面 | 62 |
| 害群之马 | 64 |
| 祖述尧舜,宪章文武 | 65 |
| 下车泣罪 | 66 |
| 化干戈为玉帛 | 67 |
| 齐心合力 | 69 |



| | |
|----------------|----|
| 如火燎原····· | 70 |
| 酒池肉林····· | 71 |
| 土崩瓦解····· | 72 |
| 太公钓鱼,愿者上钩····· | 73 |
| 爱屋及乌····· | 74 |
| 未雨绸缪····· | 75 |
| 惩前毖后····· | 76 |
| 防民之口,甚于防川····· | 77 |
| 南征北战····· | 78 |
| 毕恭毕敬····· | 79 |
| 玩火自焚····· | 80 |
| 大义灭亲····· | 81 |
| 礼贤下士····· | 83 |
| 危如累卵····· | 84 |
| 一鸣惊人····· | 85 |
| 畏首畏尾····· | 86 |
| 董狐直笔····· | 87 |
| 从善如流····· | 88 |
| 疲于奔命····· | 89 |
| 痛心疾首····· | 90 |
| 众怒难犯····· | 91 |
| 居安思危····· | 92 |
| 大公无私····· | 93 |



| | |
|------------|-----|
| 上下其手 | 94 |
| 人心如面 | 96 |
| 尾大不掉 | 97 |
| 数典忘祖 | 98 |
| 众志成城 | 99 |
| 如释重负 | 100 |
| 三令五申 | 101 |
| 推己及人 | 102 |
| 上行下效 | 103 |
| 宵鱼垂化 | 104 |
| 作法自毙 | 105 |
| 四分五裂 | 106 |
| 胡服骑射 | 108 |
| 千金买骨 | 108 |
| 负荆请罪 | 110 |
| 安然无恙 | 111 |
| 债台高筑 | 112 |
| 奉公守法 | 113 |
| 旷日持久 | 114 |
| 不遗余力 | 116 |
| 无妄之灾 | 117 |
| 奇货可居 | 119 |
| 指鹿为马 | 120 |



| | |
|-----------------|-----|
| 日不暇给 | 121 |
| 无出其右 | 123 |
| 成也萧何,败也萧何 | 124 |
| 汗流浹背 | 125 |
| 一抔黄土 | 126 |
| 安如泰山 | 128 |
| 死灰复燃 | 130 |
| 后来居上 | 131 |
| 强弩之末 | 132 |
| 桃李不言,下自成蹊 | 133 |
| 夜郎自大 | 134 |
| 奋不顾身 | 135 |
| 九牛一毛 | 136 |
| 不寒而栗 | 137 |
| 各得其所 | 138 |
| 无可奈何 | 139 |
| 姗姗来迟 | 140 |
| 天之骄子 | 141 |
| 芒刺在背 | 142 |
| 百闻不如一见 | 143 |
| 非驴非马 | 144 |
| 以身试法 | 145 |
| 五日京兆 | 146 |



| | |
|------------------|-----|
| 高深莫测 | 148 |
| 尸位素餐 | 148 |
| 千夫所指,无病自死 | 150 |
| 未可厚非 | 151 |
| 乐此不疲 | 152 |
| 车水马龙 | 153 |
| 力不从心 | 154 |
| 防微杜渐 | 155 |
| 合浦珠还 | 156 |
| 釜底游鱼 | 157 |
| 专横跋扈 | 158 |
| 老牛舐犊 | 159 |
| 三顾茅庐 | 160 |
| 如鱼得水 | 162 |
| 鞠躬尽瘁,死而后已 | 163 |
| 车载斗量 | 164 |
| 司马昭之心,路人皆知 | 165 |
| 穷兵黩武 | 166 |
| 咄咄怪事 | 167 |
| 自毁长城 | 168 |
| 一木难支 | 169 |
| 羊质虎皮 | 170 |
| 一衣带水 | 172 |



| | |
|---------------------|-----|
| 瓦解冰銷 | 173 |
| 人我穀中 | 174 |
| 剖腹藏珠 | 175 |
| 一代楷模 | 176 |
| 小鸟依人 | 177 |
| 桃李满天下 | 178 |
| 南山可移,判不可摇 | 179 |
| 炙手可热 | 180 |
| 孤注一掷 | 181 |
| 只许州官放火,不许百姓点灯 | 182 |
| 东窗事发 | 183 |
| 树倒猢猻散 | 185 |
| 两袖清风 | 186 |
| 一丝不苟 | 187 |
| 多行不义必自毙 | 188 |
| 冒天下之大不韪 | 189 |
| 暗箭伤人 | 190 |
| 城下之盟 | 191 |
| 趾高气扬 | 192 |
| 一鼓作气 | 193 |
| 庆父不死,鲁难未已 | 194 |
| 风马牛不相及 | 195 |
| 唇亡齿寒 | 197 |



| | |
|-----------------|-----|
| 言归于好 | 198 |
| 欲加之罪,何患无辞 | 199 |
| 皮之不存,毛将焉附 | 200 |
| 行将就木 | 201 |
| 退避三舍 | 202 |
| 有恃无恐 | 203 |
| 兵不厌诈 | 204 |
| 竭泽而渔 | 206 |
| 东道主人 | 207 |
| 秦晋之好 | 208 |
| 秦晋之好 | 209 |
| 各自为政 | 210 |
| 惟命是听 | 211 |
| 刚愎自用 | 212 |
| 困兽犹斗 | 213 |
| 尔虞我诈 | 214 |
| 鞭长莫及 | 215 |
| 甚嚣尘上 | 216 |
| 马首是瞻 | 217 |
| 二桃杀三士 | 218 |
| 天罗地网 | 220 |
| 秦庭之哭 | 221 |
| 如火如荼 | 222 |



| | |
|------------|-----|
| 兔死狗烹 | 224 |
| 欲取姑与 | 225 |
| 按兵不动 | 226 |
| 围魏救赵 | 227 |
| 完璧归赵 | 228 |
| 米珠薪桂 | 230 |
| 无功受禄 | 231 |
| 出奇制胜 | 232 |
| 鸡鸣狗盗 | 233 |
| 狡兔三窟 | 235 |
| 睚眦必报 | 237 |
| 抱薪救火 | 238 |
| 犹豫不决 | 239 |
| 天下无双 | 240 |
| 图穷匕见 | 242 |
| 揭竿而起 | 244 |
| 民不聊生 | 245 |
| 先发制人 | 246 |
| 三户亡秦 | 247 |
| 一败涂地 | 248 |
| 披坚执锐 | 249 |
| 破釜沉舟 | 250 |
| 约法三章 | 252 |



| | |
|---------------------|-----|
| 项庄舞剑,意在沛公 | 253 |
| 背水一战 | 254 |
| 声东击西 | 256 |
| 四面楚歌 | 257 |
| 一饭千金 | 258 |
| 运筹帷幄之中,决胜千里之外 | 260 |
| 多多益善 | 261 |
| 推心置腹 | 262 |
| 得陇望蜀 | 263 |
| 薏苡明珠 | 264 |
| 不入虎穴,焉得虎子 | 266 |
| 万死不辞 | 267 |
| 坚壁清野 | 268 |
| 投鼠忌器 | 269 |
| 闻雷失箸 | 270 |
| 开门揖盗 | 271 |
| 箭在弦上,不得不发 | 272 |
| 谈笑自若 | 274 |
| 草船借箭 | 275 |
| 万事俱备,只欠东风 | 276 |
| 赤膊上阵 | 278 |
| 偃旗息鼓 | 279 |
| 忍辱负重 | 280 |

| | |
|-------------------|------------|
| 兵不血刃 | 282 |
| 草木皆兵 | 283 |
| 一箭双雕 | 284 |
| 破镜重圆 | 286 |
| 罄竹难书 | 287 |
| 庸人自扰 | 289 |
| 探囊取物 | 290 |
| 黄袍加身 | 291 |
| 烛影斧声 | 292 |
| 逼上梁山 | 293 |
| 痛饮黄龙 | 294 |
| 过河拆桥 | 295 |
| 八面威风 | 297 |
| 处世哲学 | 298 |
| 河豚鱼 | 298 |
| 驳象虎疑 | 298 |
| 孔雀爱尾 | 299 |
| 名不符实 | 300 |
| 神龟托梦 | 302 |
| 猩猩嗜酒 | 303 |
| 燕雀相乐 | 304 |
| 弓矢相济 | 305 |
| 楚人学齐语 | 306 |





| | |
|-------------------|------------|
| 多言何益 | 306 |
| 挖井得一人 | 307 |
| 郑人乘凉 | 308 |
| 楚人象虎 | 308 |
| 所树非人 | 310 |
| 黠儿窃李 | 311 |
| 大王降祸 | 312 |
| 不韞手药 | 313 |
| 有好鸥鸟者 | 314 |
| 急性子与慢性子 | 315 |
| 人生经验 | 316 |
| 虺 | 316 |
| 染 丝 | 316 |
| 折 箭 | 317 |
| 千金求马 | 318 |
| 好猎者 | 319 |
| 拒子入门 | 319 |
| 刻削之道 | 320 |
| 猎者得麋 | 321 |
| 儒子驱鸡 | 322 |
| 公仪休嗜鱼 | 322 |
| 猫祝鼠寿 | 323 |
| 泉将东徙 | 324 |



| | |
|-------------------|------------|
| 树林与篝火 | 325 |
| 求知态度 | 327 |
| 羊蒙虎皮 | 327 |
| 从三到万 | 328 |
| 胶柱鼓瑟 | 329 |
| 薛谭学歌 | 330 |
| 奕秋授奕 | 331 |
| 恃胜失备 | 332 |
| 自护其短 | 333 |
| 耕耘与收获 | 334 |
| 南海朝佛 | 334 |
| 真善美颂 | 337 |
| 义 犬 | 337 |
| 两头蛇 | 338 |
| 小狗救母 | 339 |
| 猎人救象 | 340 |
| 冯妇搏虎 | 341 |
| 支公爱鹤 | 342 |
| 欲不欲 | 343 |
| 韩娥善歌 | 344 |
| 宋清卖药 | 345 |
| 假丑恶愚 | 347 |
| 特 长 | 347 |